

शिक्षा में गुणवत्ता और उत्कृष्टता

जे. एस. राजपूत

खोज, अन्वेषण, सृजन, पुनर्निर्माण और परिशोधन की सनातन अंतःप्रेरणा मानवजाति को अन्य प्रजातियों से पृथक् करती है। श्री अरबिंदो ने इसका दिव्य जीवन में व्यापक वर्णन किया है। “पशु भोजन की थोड़ी-सी मात्रा से ही संतुष्ट हो जाता है। देवता अपनी महिमाओं से ओतप्रोत रहते हैं, परंतु मनुष्य तब तक स्थाई रूप से चैन से नहीं बैठता जब तक कि वह सर्वोत्कृष्टता हासिल नहीं कर लेता। जीवों में वह सबसे महान है क्योंकि ये सर्वाधिक असंतुष्ट है। वह इच्छा उत्पन्न करने और मार्ग में आने वाली बाधाओं को तोड़ने का दृढ़ संकल्प रखता है। शायद अकेला वही है जो कि दूरस्थ आदर्श के दिव्य उन्माद की क्षमता रखता है।” मानव सभ्यता का इतिहास जीवन के हरेक क्षेत्र में ‘बेहतर’ की दिशा में मानवीय प्रयासों और पहलों की महान कथा है जिसका उनके जीवन पर प्रभाव पड़ा है। इन पहलों की शुरुआत सामाजिकता की जड़ें पकड़ने, प्यार, देखभाल, परिवार, व्यापक मानवीय गठबंधनों के तौर पर फलीभूत होने के वास्ते हुई थी। मानव सभ्यता की प्रक्रिया निर्बाध रूप से जारी रही है और आधुनिक समय में मानवीय अनन्त एकता की अवधारणा स्वीकार्य हो रही है। इसी तरह नैतिकता, सदाचार और मानवीय मूल्यों के उद्भव की वैश्विक रूप से चर्चा हो रही है। यह मार्ग आसान नहीं है, हिंसा, युद्ध, दासता, रंगभेद, उपनिवेशवाद, जातिगत भेदभाव, लालच और ऐसे नकारात्मक लक्षणों ने मानवीय प्रगति और विकास पर काफी दुखद अड़चन डाली है। यद्यपि, ये गुणवत्ता वृद्धि और मानवीय प्रयास के हरेक क्षेत्र में उत्कृष्टता और साहस को रोकने में विफल रहे हैं। मनुष्य को उन स्तरों तक पहुंचाने में कई सदियों लग गई हैं जिससे अंततः मानवाधिकारों और सभी पुरुषों और महिलाओं के लिये सभी प्रकार की समानताएं हासिल हो सकी हैं। प्रत्येक सभ्यता, विभिन्न स्थानों और भिन्न-भिन्न स्थितियों में हो रहे विकास और अन्य कार्यों ने अपनी तरह के अनुभव, सूचना, ज्ञान और कौशलों का भण्डार तैयार किया है। नये ज्ञान के अधिग्रहण की प्रक्रिया, इसके उपयोग और संरक्षण ने नई पीढ़ियों को इसके अंतरण की आवश्यकता को जन्म दिया है। यह प्रक्रिया धीरे धीरे सांस्थानिक हो गई जिससे यह शिक्षण और उन्नत शिक्षण के बड़े केंद्रों के तौर पर परिवर्तित हो गई। तक्षशिला विश्वविद्यालय (600 बीसी से 500 एडी तक), नालंदा (500 एडी से 1300 एडी), मोरक्को में अल-कारैईन (859 एडी में एक मस्जिद के तौर पर शुरू हुई जिसमें गणित, भौतिकी और रसायन विज्ञान जैसे विषय 1959 में शुरू किये गये), मिस्र में 970-72 एडी में अल-अज़हर और बगदाद में अल-निज़ामिया, 1065 एडी में ख्वाजा निज़ाम उल-मुल्क द्वारा वित्त पोषित, बहुतों द्वारा सबसे पुराने पांच विश्वविद्यालयों के तौर पर माने जाते हैं। पश्चिमी दुनिया में उच्चतर

प्रत्येक व्यक्ति गुणवत्ता और उत्कृष्टता के महत्व को समझता है। यह समझ अत्यधिक विषयवान हो सकती है और इस तरह ‘गुणवत्ता’ और ‘उत्कृष्टता’ को वास्तविक गणितीय परिभाषाओं में वर्णन करना आसान नहीं है। संभवतः यह आवश्यक भी नहीं है। यहां तक कि यदि पूर्वनिर्धारित लक्ष्य हासिल कर लिया जाता है, पूर्व के लक्ष्य की तबदीली पहला कार्य हो सकता है जो इस प्रक्रिया से उभरता है। ये शिक्षण संस्थान ही हैं जो युवाओं को जॉन विलियम गार्डनर के शब्दों में वर्णित संदेश को समझने में प्रशिक्षित करते हैं। “उत्कृष्टता साधारण बातों को असाधारण तरीके से संपन्न करना होता है”। और इनकी जॉन फिटजगेराल्ड कैनेडी से तुलना कीजिए, “राष्ट्र के तौर पर हमारी प्रगति शिक्षा में हमारी प्रगति की अपेक्षा तेज़ नहीं हो सकती। मानवीय मस्तिष्क हमारा आधारभूत संसाधन है”। आज के विकसित राष्ट्र ऐसे हैं जिन्होंने शिक्षा में गुणवत्ता के मूल्य और उत्कृष्टता को महसूस किया है और तदनुसार अपने संस्थानों को मूर्तरूप दिया। वास्तव में उच्चतर शिक्षण संस्थानों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। उत्कृष्टता को हासिल करना शिक्षाविदों, शिक्षकों, विचारकों, सृजकों और उन सभी का प्रयास रहा है जिन्हें उससे बेहतर करने का जुनून है जो पहले हासिल किया जा चुका है। उन सभी ने एक कठिन और कुशल मार्ग को चुना है। अरस्तु ने चाह रखने वालों को ठीक ही संदेश दिया था: “उत्कृष्टता कोई अचानक होने वाली घटना नहीं है। यह सदैव उच्च इरादे, ईमानदार प्रयास और बुद्धिमानीपूर्ण निष्पादन का परिणाम है, यह बहुत से विकल्पों का बुद्धिमानी पूर्ण विकल्प प्रस्तुत करता है-विकल्प अवसर नहीं है,



तब अकेले इसे भारतीय मिट्टी की गहराई में जोड़ा जाता और साथ ही साथ दुनिया के देशों से नये विचारों, अन्वेषणों और नवाचारों को प्राप्त करने के लिये खुलेमन और सावधानी के साथ प्राप्त किया जाता। शिक्षा में भारतीय विचारकों द्वारा स्वेच्छाचार प्रभावी समायोजन पर जॉन गार्डनर ने ठीक ही कहा है, “हमें यह भी मालूम नहीं है कि आने वाले वर्षों में हमें कौन से कौशलों की आवश्यकता होगी। यही कारण है कि हमें अपने नौजवानों को ज्ञान के आधारभूत क्षेत्रों में प्रशिक्षित करना चाहिये और उन्हें परिवर्तनों की समझ और अनुकूलन के लिये तैयार करना चाहिये। यही वजह है कि हमें उन्हें दिमाग के महत्वपूर्ण गुण और चरित्र के टिकाऊ गुण प्रदान करने चाहिये जो कि उन्हें उन स्थितियों में काम आयेंगे जिनके बारे में हम अनुमान भी नहीं लगा सकते हैं।”

एम.वी. कामथ ने अपने शानदार निबंध ‘उत्कृष्टता का प्रयास’ में जेआरडी टाटा के शब्दों को का उल्लेख किया जिन्होंने अपने कार्य क्षेत्र में उत्कृष्टता का खुलासा किया: “यदि आपका उद्देश्य पूर्णता है, आप उत्कृष्टता को हासिल कर सकते हैं।” किसी भी व्यवस्था में जो वास्तव में अपने कार्य के प्रति समर्पण और प्रतिबद्धता रखते हैं अक्सर अधिक करने की आशा रखते हैं। उपलब्धि हासिल करने वाले सदैव ‘अधिक हासिल’ कर सकते हैं। कामथ ने ‘कर सकते हैं’ शब्दों पर जोर दिया। टाटा ने जीवन में, व्यवसाय में और एक मनुष्य के रूप में उत्कृष्टता हासिल की परंतु हमेशा एक प्रश्न बना रहा, आपने उत्कृष्ट किया, परंतु इससे बेहतर क्यों नहीं, श्रेष्ठ से बेहतर (वर्तमान) करने का प्रयास करें और लक्ष्य को आगे तक ले जायें। उत्कृष्ट के प्रयास दूसरों को पथ पर आकर्षित करते हैं। जब 1924 में मेघनाद शाह को रॉयल सोसाइटी की अध्येतावृत्ति के लिये चुना गया, यह घटना विज्ञान के प्रति युवा छात्रों को आकर्षित करने का स्रोत बन गया। विज्ञान में रुचि उत्पन्न हो गई परंतु भाग्यशाली लोगों तक ही इसकी पहुंच कायम हुई। साहा सदैव प्रतिभावान युवा व्यक्तियों की तलाश में रहते थे और उनके द्वारा पहचान किये गये व्यक्तियों में एक डी एस कोठारी थे जिन्होंने भौतिकी, शिक्षा और विज्ञान तथा आध्यात्मिकता में योगदान किया जो इस बात का सबूत है कि साहा कितने दूरदर्शी थे। यह उत्कृष्टता के प्रयासों की निरन्तरता तथा गतिशीलता की ओर भी संकेत करता है। डी.एस. कोठारी राष्ट्रीय शिक्षा आयोग के अध्यक्ष रहे (1964-66) और इसके आधार पर भारत सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1968 तैयार की। यह अपने आप में शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण सुधार की दिशा में एक कदम था क्योंकि पहली बार यह प्रतिपादित किया गया कि 10वीं कक्षा तक लड़के और लड़कियां दोनों एकसमान पाठ्यक्रम का अध्ययन करेंगे और इसमें विज्ञान तथा गणित अनिवार्य विषय होंगे। डॉ. कोठारी ने यह समझा कि यह कितना महत्वपूर्ण था कि प्रत्येक युवा को दस वर्षों तक विज्ञान का अध्ययन करने दिया जाये क्योंकि इससे विज्ञान के प्रति गहन नदरे

72 एडी में अल-अज़हर और बगदाद में अल-निज़ामिया, 1065 एडी में ख्वाजा निज़ाम उल-मुल्क द्वारा वित्त पोषित, बहुतें द्वारा सबसे पुराने पांच विश्वविद्यालयों के तौर पर माने जाते हैं। पश्चिमी दुनिया में उच्चतर अध्ययन का सबसे पुराना केंद्र इटली में बोलोगना में था। 21वीं सदी में, राष्ट्रों की ज्ञान पूंजी का स्तर और पैमाना इस बात पर निर्भर करता है कि उनके उच्चतर शिक्षण और अनुसंधान संस्थान अनुसंधानों और नवाचारों के जरिये नये ज्ञान के सृजन में किस प्रकार योगदान कर रहे हैं। किसी भी देश की प्रगति और विकास की गति इस बात पर भी निर्भर करती है कि यह तकनीकी ज्ञान क्षेत्र में कितना उन्नत है और किस हद तक यह अपने प्रतिभा पूल का परिपोषण करता है तथा उनके चुने गये क्षेत्र में बेहतर गुणवत्ता और उत्कृष्टता पाने में अवसर तथा समर्थन प्रदान करता है।

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा का लक्ष्य गुणवत्तापूर्ण ज्ञान के साथ गौरवशाली भक्ति और समर्पण की एक गाथा हुआ करती थी जो कि नियमित जीवन के लिये उपयोगी होने के साथ-साथ जीवन से पूर्व और पश्चात की बुनियादी समझ, मानवीय अस्तित्व का उद्देश्य आदि से जुड़ी होती थी जिससे जीवन के उद्देश्य को परिभाषित करने में सहायता मिलती थी। शिक्षा की वर्तमान प्रणाली पूर्व की घरों में विकसित होने वाली परंपरा की निरन्तरता नहीं है, यद्यपि इसके बारे में बहुत कुछ अपेक्षा होती है। स्कूली शिक्षा प्रतिभा के अध्ययन और पहचान के अवसर उपलब्ध करवाती है और इनके बारे में उच्चतर शिक्षा प्रणाली में निखार लाने का प्रयास किया जाता है। यह गुणवत्ता और उत्कृष्टता का स्तर है जिस पर शिक्षण संस्थान कार्य करते हैं जो कि बाद में इस बारे में प्रत्येक अन्य क्षेत्र के स्तरों का निर्धारण करते हैं। अतः शिक्षा की भूमिका गुणवत्ता के उन्नयन और उत्कृष्टता के लिये प्रोत्साहन में महत्वपूर्ण हो जाती है। यह सर्वविदित है कि “कोई भी व्यक्ति अपने अध्यापकों के स्तरों से ऊपर नहीं हो सकता”। 2015 में भारत में 16423 शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान थे जिन्हें उनके कार्य में सब तरह की सहायता की आवश्यकता है। 85 लाख स्कूल अध्यापकों में से 79 प्रतिशत प्रशिक्षित थे। करीब 23 करोड़ बच्चों को भारत में करीब 15 लाख स्कूलों में अध्ययन करना होता है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के 2014-15 के आंकड़ों के अनुसार 329 राज्य विश्वविद्यालय हैं, 46 केंद्रीय विश्वविद्यालय, 128 विश्वविद्यालयवत् संस्थान, 74 राष्ट्रीय महत्व के संस्थान और 250 राज्य निजी विश्वविद्यालय हैं, जो कि देश में कार्यरत हैं। इनमें करीब 3.33 करोड़ दाखिले होते हैं। इन संस्थानों से उत्पन्न होने वाली गुणवत्ता मानवीय प्रयास के हर क्षेत्र में गुणवत्ता को प्रभावित कर सकती है। गुणवत्ता और उत्कृष्टता की चर्चा करने से पहले, यह जान लेना महत्वपूर्ण हो जाता है कि भारतीय शिक्षा को ज्ञान-मीमांसा आधार कहां से उपलब्ध हो सकता है जिसकी इसके लिये ज्ञान आतिथ्य परंपरा के साथ निरंतरता बनाये रखने के लिये आवश्यकता है और साथ ही दुनिया के कोने-कोने से विचारों और सामग्री के लिये भी द्वार खुले रखने की आवश्यकता है।



आपके गंतव्य को निर्धारित करता है।”

भारतीय संदर्भ में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की दिशा में कदम बढ़ाने का आधार क्या हो सकता है? धनी परंपराओं के अलावा भारत को अपनी शिक्षा प्रणाली को पर्याप्त गति और विश्वास के साथ पटरियों पर लाने के वास्ते मजबूत दर्शन होने का वरदान प्राप्त है। शिक्षा पर कोई भी गंभीर बात करने पर कुछेक रटी रटाई बातें सामने आती हैं इनमें सबसे महत्वपूर्ण है: हम अब भी शिक्षा की अधिरोपित प्रणाली, थॉमस बाबिंगटन मैकॉले के मस्तिष्क की उपज, का अनुपालन कर रहे हैं। 1835 के उनके महत्वपूर्ण कार्यवृत्त वास्तव में भारतीयों को उनकी संस्कृति, इतिहास और धरोहर से वंचित रखते हुए साम्राज्यवादी रणनीति तैयार करने की दिशा में कदम माना जाता है। इस उद्देश्य को हासिल करने के वास्ते शिक्षा एक प्रमुख कुंजी थी और वे इसमें बहुत हद तक कामयाब भी हुए। स्वदेशी प्रणाली की बात उस वक्त चली जब इसकी मौजूदगी के लिये स्वतंत्रता संग्राम की शुरुआत हुई। साम्राज्यवादी शासन के अधीन किसी भी अन्य देश में शिक्षा को उतना महत्व नहीं दिया गया था जितना कि 1947 से पूर्व भारत में दिया गया। हमारे विचारक, दार्शनिक, शिक्षाविद और राजनीतिक नेता सभी इस बात को लेकर सहमत थे कि शिक्षा का प्रकाश फैलाना ही सामाजिक एकता की दिशा में आगे बढ़ने के प्रयासों में सफल होने की कुंजी है। स्वामी विवेकानंद के लिये यह “व्यक्ति निर्माण शिक्षा” होनी चाहिये जिसका उद्देश्य चरित्र का निर्माण करना है। गांधीजी चाहते थे कि शिक्षा ‘सिर, हाथ और दिल’ अथवा ‘शरीर, मन और भावना’ से उत्कृष्ट खाका खींचे। श्री अरबिंदो चाहते थे कि आयु बढ़ने की प्रक्रिया के दौरान दिमाग की सलाह ली जानी चाहिये और एक मशहूर पंक्ति का उल्लेख किया “कुछ भी सिखाया नहीं जा सकता”, जो स्वामी विवेकानंद के रहस्योद्घाटन के साथ पूरी तरह मेल खाता है कि “शिक्षा मनुष्य में पहले से ही मौजूद पूर्णता की अभिव्यक्ति है”। रबीन्द्रनाथ ठाकुर के शब्दों में, “सर्वोच्च शिक्षा वह है जो न केवल हमें सूचना प्रदान करती है बल्कि सदभाव के साथ हमारे जीवन में आती है।” जानेमाने दार्शनिक-देशभक्त डॉ. राधाकृष्णन ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की परिकल्पना कुछ इस तरह से की, “शिक्षा का अंतिम उत्पाद एक मुक्त सृजनात्मक मनुष्य होना चाहिये जो कि ऐतिहासिक परिस्थितियों और प्रकृति की विपरीत स्थितियों से लड़ सके। इन और कई अन्य अवधारणाओं और विचारों से संकल्पना आधार की प्रचुरता इंगित होती है जिस पर भारतीय शिक्षा नीति तैयार किये जाने की आवश्यकता थी।

लड़कियां दोनों एकसमान पाठ्यक्रम का अध्ययन करण और इसमें विज्ञान तथा गणित अनिवार्य विषय होंगे। डॉ. कोटारी ने यह समझा कि यह कितना महत्वपूर्ण था कि प्रत्येक युवा को दस वर्षों तक विज्ञान का अध्ययन करने दिया जाये क्योंकि इससे विज्ञान के प्रति रुझान बढ़ेगा, विज्ञान के तेजी से अग्रसर हो रहे क्षेत्रों में पर्याप्त मानवशक्ति उपलब्ध होगी और उभरते बच्चों के लिये बहुत बड़े और व्यापक अवसर खुलेंगे, सचमुच में इससे शिक्षा की गुणवत्ता में योगदान होगा जो कि भविष्य की मांगों के संगत होगा। साथ ही उन्होंने मूल्य शिक्षा, कौशल विकास और व्यवसायीकरण पर बहुत जोर दिया था। इसने भारतीय शिक्षा प्रणाली की मजबूती को स्मरण किया और विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी को वैश्विक क्रम में आगे बढ़ने के लिये इसे गले लगाने का आह्वान किया।

अत्यधिक व्यक्तित्व विकास की खोज के लिये, और प्रतिभा उन्नयन आईक्यू से ईक्यू और एसक्यू में परिवर्तित हो गया। ऐसी भिन्न-भिन्न व्याख्याएं और कथन हो सकते हैं कि गुणवत्ता और उत्कृष्टता के क्षेत्र में कौन सर्वाधिक सज्जित है। उनके हाल के अनुसंधानों के आधार पर लेखक पॉल टफ ने सात कौशलों की पहचान की है: कौशल, दृढ़ता, जिज्ञासा, ईमानदारी, आत्म-नियंत्रण, आशावाद और धैर्य। यदि संस्थान महसूस करें कि बचपन और किशोरोवस्था इनके विकास के लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण चरण होते हैं, व्यक्ति विशेष को गुणवत्ता में योगदान और उत्कृष्टता की दिशा में अग्रसर होने के लिये पूरी तरह सज्जित किया जा सकता है। यद्यपि ‘सात’ अंक बाध्यकारी नहीं हो सकते हैं, इन कौशलों, अथवा मूल्यों अथवा विशेषताओं को मात्र नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता। समाजों में जहां पहली और दूसरी पीढ़ियों से स्कूलों और कालेजों में शिक्षार्थियों की अच्छी संख्या है, क्षमताओं और योग्यताओं का देर से विकास अक्षम्य हो जायेगा। साथ ही उनके लिये पार्श्व बाह्य मार्ग उपलब्ध नहीं करवाने के परिणामस्वरूप, जो कि उच्चतर शिक्षा के इच्छुक नहीं हैं, बौद्धिक कार्य के उच्चतर स्तर के लिये जरूरी श्रेणी में भीड़भाड़ उत्पन्न हो सकती है। परंतु किसी को भी बिल गेट्स, स्टीव जॉब्स और कई अन्यो के मामलों को कतई नज़र अंदाज नहीं करना चाहिये जो कि बगैर उच्चतर शिक्षा के आगे बढ़े और गुणवत्ता और उत्कृष्टता के नये मानदंडों का सृजन किया। कोई भी एक बार फिर एम. वी. कामथ को व्यावहारिक परिप्रेक्ष्य में बातें करने का उद्धरण इंगित कर सकते हैं: “उत्कृष्टता का हॉलमार्क निश्चित रूप से किसी के लिये अन्यो की उत्कृष्टता से अधिक उत्कृष्ट होना है। हम सभी कोई संत, नोबेल पुरस्कार विजेता या ओलंपिक चैंपियन नहीं हो सकते। परंतु एक बात ज़रूर है कि जो हम कर सकते हैं: और वह है कि हमें कल से बेहतर करना है और आज जो कुछ हमने किया है कल उससे बेहतर करना है। प्रक्रिया निरंतर है और आत्म परीक्षण और आत्म नवीकरण के महान कार्य का आह्वान करती है। यह व्यक्ति कि अपनी छवि, विश्वास और आश्वासन होता है जो क्षितिज को बदल देता है।

(लेखक एनसीईआरटी, नई दिल्ली के पूर्व निदेशक हैं)